बिहार में विकास नीति का प्रभावः 2005 से 2020

डॉ० मो० जमशैद आलम
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग
मिल्लत कॉलेज, दरभंगा
ल०न० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सद्दाम हुसैन
रिसर्च स्कॉलर (जे०आर०एफ०)
वि०वि० राजनीति विज्ञान विभाग
ल०न० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
ईमेलः saddam16395@gmail.com

सारांश

आज विकास न केवल आम जनता की जरूरत है, बल्कि यह एक प्रमुख राजनीतिक मुद्दा भी बन गया है। विभिन्नस आंकड़ों के आधार पर यह कहा जाता है कि वर्तमान बिहार तेजी से विकास कर रहा है। वर्ष 2005 में एन०डी०ए० (राष्ट्री य लोकतांत्रिक गठबन्धजन) की सरकार बनने के बाद बिहार के विकास की गति पहले की अपेक्षा तेज हुई। बिहार के विकास की चर्चा देश एवं विदेश के समाचार पत्रों की सुर्खियां बनने लगी। विकास की वह गति आज भी बरकरार है। भारत में लोकतांत्रिक व्यशवस्थात को अपनाया गया है। एक लोक कल्याहणकारी सरकार जनता, समाज एवं देश के समुचित विकास के लिए समर्पित होती है और जन–हित एवं राष्ट्ररहित के कार्य करती है। सामान्यर रूप से बाहरी चमक–दमक को देखकर कह दिया जाता है कि वह क्षेत्र विकास कर रहा है। वैसे अर्थशास्त्रियों के अनुसार, सकल राष्ट्री य उत्पा द (जी०डी०पी०) में वृद्धि को विकास का पैमाना माना जाता है।

प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र की अलग–अलग समस्याएं एवं आवश्यकताएं होती हैं। भारत विविधताओं से भरा देश है। जिसके कारण उसकी समस्याओं में भी विविधता होती है। अतः विभिन्न क्षेत्रीय समस्याओं का समाधान एवं क्षेत्र के विकास का कार्य संबंधित विधानसभा क्षेत्रों से चुने गए जनप्रतिनिधियों द्वारा ही सुचारु रुप से किया जा सकता है। वर्तमान समय में बिहार राज्य में सामान्य रूप से अगर हम रोजमर्रा के जीवन पर नजर डाले तो लगता है, कि सचमुच हमारी सहूलियतें बढ़ गई है। निश्चित ही यह विकास का लक्षण है। लेकिन विकास के साथ एक बड़ी विचित्र बात यह हो रही हैं कि सकारात्मक के साथ–साथ नकारात्मक बातों का भी विकास हो रहा है। आज आर्थिक विकास के साथ भ्रष्टाचार और दूसरे अपराधों ने भी अपना विकास कर लिया है।

मुख्य बिन्दु

बिहार, विकास, समस्याएं, विधानसभा, भ्रष्टाचार, अपराध, समाधान, समस्या।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 27.02.2023
Approved: 21.03.2023

डॉ० मो० जमशैद आलम, सद्दाम हुसैन

बिहार में विकास नीति का प्रभावः 2005 से 2020

RJPP Oct.22-Mar.23, Vol. XXI, No. I,

pp.136-147
Article No. 19

Online available at :
https://anubooks.com/rjpp-2023-vol-xxi-no-1

प्रस्तावना

अभी यक़ीन करना मुश्किल लगता है कि 1952 तक बिहार देश का सबसे सुशासित राज्य था और इसी बिहार में, जो 270 ईसा पूर्व में मगध था, सम्राट अशोक ने प्रशासन प्रणाली एक ढाँचा विकसित किया था। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह बहस चल रही है कि क्या सम्राट अशोक ने ही आधुनिक खुली अर्थव्यवस्था की नींव रखी थी। लेकिन यह विडंबना है कि समकालीन राजनीति में उसी बिहार का उल्लेख सबसे अराजक राज्य के रुप में होता है। इसी बिहार ने आज़ादी के बाद का देश का अकेला जन–आंदोलन खड़ा किया लेकिन ग़रीबी और कुपोशण से लेकर राजनीति के अपराधीकरण तक के लिए यही बिहार बदनाम भी सबसे अधिक हुआ।

हाल के दिनों में आंकड़ो ने बिहार के बदलने के संकेत दिए हैं तथा ज़मीनी स्थिति कितनी बदली है यह भी स्पष्ट है।

अन्य भारतीय राज्यों की तरह ही बिहार भी लंबे समय तक कांग्रेस के प्रभाव में रहा है। श्रीकृष्ण सिन्हा ने वर्ष 1946 में मुख्यमंत्री का पद संभाला तो वे वर्ष 1961 तक लगातार इस पद पर बने रहे। चार छोटे ग़ैर कांग्रेस सरकारों के कार्यकाल को छोड़ दें तो 1946 से 1990 तक राज्य में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ही सत्तारुढ़ रही।

पहली बार पाँच मार्च 1967 से लेकर 28 जनवरी 1968 तक महामाया प्रसाद सिन्हा के मुख्यमंत्रित्व काल में जनक्रांति दल का शासन रहा। इसके बाद 22 जून 1969 से लेकर चार जुलाई 1969 तक कांग्रेस के ही एक धड़े कांग्रेस (ओ) का शासन रहा और भोला पासवान शास्त्री ने मुख्यमंत्री का पद संभाला। सोशलिस्ट पार्टी के लिए कर्पूरी ठाकुर 22 दिसंबर 1970 से दो जून 1971 तक मुख्यमंत्री रहे और फिर 24 जून 1977 से 17 फ़रवरी 1980 तक कर्पूरी ठाकुर और रामसुंदर दास के मुख्यमंत्रित्व काल में जनता पार्टी का शासन रहा। बिहार को राजनीतिक रुप से काफ़ी जागरुक माना जाता है लेकिन यह राजनीतिक रुप से सबसे अस्थिर राज्यों में से भी रहा है। शायद यही वजह है कि श्रीकृष्ण सिन्हा के वर्ष 1961 में मुख्यमंत्री पद से हटने के बाद 1990 तक क़रीब 30 सालों में 23 बार मुख्यमंत्री बदले और पाँच बार राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाना पड़ा। संगठन के स्तर पर कांग्रेस पार्टी राज्य स्तर पर कमज़ोर होती रही और केंद्रीय नेतृत्व हावी होता चला गया। लेकिन साफ़ दिखता है कि बिहार की राजनीतिक लगाम उसके हाथों से भी फिसलती रही। इन 30 सालों में 23 मुख्यमंत्री बदले जिस में 17 कांग्रेस के थे।

गुजरात मेस के बिल (1973) को लेकर शुरु हुआ छात्रों का आंदोलन जो नागरिक समस्याओं का आंदोलन था जब 1974 में बिहार पहुँचा तो वह धीरे–धीरे इसका स्वरुप व्यापक हो गया। शैक्षिक स्तर में गिरावट, महंगाई, बेकारी, शासकीय अराजकता और राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण के मुद्दों पर शुरु हुआ यह आंदोलन सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण (जेपी) के नतृत्व में एक देशव्यापी आंदोलन बन गया। चंद्रशेखर, मोहन धारिया, हेमवती नंदन बहुगुणा, जगजीवन राम, रामधन और रामकृष्ण हेगड़े जैसे दिग्गज नेता कांग्रेस से अलग होकर जेपी के साथ आ गए। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को इस आंदोलन से इतना ख़तरा महसूस होने लगा कि 26 जून, 1975 को इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल लगाने की घोषणा। उसके पीछे संपूर्ण क्रांति आंदोलन एक बड़ा

कारण था। इसके बाद जनता पार्टी की सरकार आई लेकिन वह अपने ही अंतर्विरोधों की वजह से जल्दी ही गिर गई। बिहार में भी उसका यही हश्र हुआ।

बिहार में जेपी के आंदोलन ने एक नए नेतृत्व को जन्म दिया। लालू प्रसाद यादव और नीतीश कुमार उसी की उपज थे। ये नई पीढ़ी राममनोहर लोहिया और जेपी के प्रभाव में जाति तोड़ो आंदोलन की हामी थी। अस्सी के दशक के अंत आते–आते तक उनकी विचारधारा बदलने लगी थी। वर्ष 1989 में जब केंद्र में वीपी सिंह के प्रधानमंत्रित्व काल में जनता दल सरकार ने मंडल आयोग की रिपोर्ट को लागू किया तो बिहार के नेता लालू प्रसाद यादव, नीतीश कुमार और रामविलास पासवान उसके सबसे बड़े समर्थकों में से थे। इसके बाद बिहार में लालू प्रसाद यादव का उदय हुआ। बिहार में जनता दल को वीपी सिंह के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन की वजह से जीत मिली और लालू प्रसाद यादव 10 मार्च 1990 को मुख्यमंत्री बने। लेकिन भ्रष्टाचार के आरोपों की वजह से 25 जुलाई 1997 को उन्हें अपना पद छोड़ना पड़ा। इसके बाद मुख्यमंत्री के पद पर उन्होंने अपनी पत्नी राबड़ी देवी को बिठा दिया जो छह मार्च 2005 तक लगातार मुख्यमंत्री बनी रहीं।

भाजपा कभी भी ऐसी स्थिति में नहीं आ सकी कि वह अपने बलबूते पर सरकार का गठन कर सके और इस बीच राज्य में कांग्रेस एक तरह से हाशिए पर ही चली गई। लालू–राबड़ी के तीन कार्यकालों के बाद बिहार में एक परिवर्तन आया और राष्ट्रीय जनता दल को हार का सामना करना पड़ा। त्रिशंकु विधानसभा उभरी। लालू प्रसाद के पुराने गुरु जॉर्ज फ़र्नांडिस के साथ उनके पुराने साथी नीतीश कुमार ने जनता दल (यूनाइटेड) बनाकर सत्ता परिवर्तन किया। हालांकि नीतीश को सरकार बनाने के लिए मशक्कत करनी पड़ी। राज्य में राष्ट्रपति सात मार्च से 24 नवंबर, 2005 तक शासन रहा। फिर 24 नवंबर, 2005 को नीतीश कुमार ने भाजपा के समर्थन से बिहार के मुख्यमंत्री का पद संभाला।

लगभग 17 वर्ष पूर्व बिहार की जनता ने पूरी आशा और विश्वास के साथ शासन की बागडोर श्री नीतीश कुमार को सौंपी। इस ने वर्ष 2005 में कानून का राज स्थापित करने और न्याय के साथ विकास के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर इसने सुशासन, पारदर्शिता एवं समावेशी विकास के सिद्धांतों पर शासन की नींव रखी। पहले वर्ष 2005 से 2010 तक के लिए और इसके उपरांत वर्ष 2010 से 2015 एवं 2015 से 2020 के लिए सुशासन के कार्यक्रम बनाये गये। इसकी पूरी ईमानदारी एवं लगन से ''सुशासन के कार्यक्रम'' पर आधारित नीतियों, कार्यक्रमों एवं योजनाओं का क्रियान्वयन किया। उपलब्धियों, संभावनाओं एवं चुनौतियों से परिपूर्ण इस यात्रा में इसकी सरकार को राज्य की जनता का भरपूर सहयोग एवं समर्थन मिल रहा है। और अब तक मुख्यमंत्री का पद संभाले हुए हैं।

शोध समस्या

किसी विधानसभा क्षेत्र के विधायकों के द्वारा ही उस क्षेत्र में रहने वाले लोगों को सुविधाएं प्रदान की जाती है, उस क्षेत्र का विकास किया जाता है एवं उनकी समस्याओं का निराकरण किया जाता है। ऐसी स्थिति में विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों का उत्तरदायित्व, भूमिका एवं कार्य काफी महत्वपूर्ण हो जाता है। विधायकों की तत्परता, कुशलता, लगनशीलाता एवं कार्य क्षमता पर ही संबंधित

विधानसभा क्षेत्र की जनता की समस्याओं का समाधान निर्भर है। विधानसभा की निर्वाचित सदस्यों की भूमिका, सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन में भी काफी महत्वपूर्ण होती है। अपने क्षेत्र में सड़कों, नालों, सामुदायिक भवनों का निर्माण के साथ–साथ अपने क्षेत्र में स्वास्थ्य एवं पीने के पानी की व्यवस्था करना, इसके लिए एक चुनौती है। अतः यह जानना एवं समझना अति आवश्यक है कि –

- क्या विधायकों द्वारा राज्य का वास्तविक विकास किया गया या उनका विकास–कार्य सिर्फ कागजी है?
- सरकारी योजनाओं का क्षेत्रीय विकास पर कैसा और कितना प्रभाव पड़ रहा है?
- क्या विधायक अपने क्षेत्र का समुचित विकास संतुलित रूप से करते हैं?

शोध–अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है–

- बिहार विधानसभा सदस्यों के द्वारा बनाए गए, विकास–नीति का गहन अध्ययन करना।
- बिहार के विकास–नीति में विधायकों की भूमिका का विश्लेषण करना।
- पूर्व एवं वर्तमान विकास–नीति के बीच संबंध स्थापित करना।

शोध–अध्ययन की परिकल्पना या उपकल्पना :

- बिहार के विकास संबंधी नीतियों के निर्धारण में विधायकों की भूमिका होती है।
- विधायकों द्वारा राज्य में वास्तविक विकास किया गया है।
- विकास संबंधी योजनाओं के क्रियान्वयन एवं अनुश्रवण में विधायकों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

शोध–अध्ययन की विधि

अध्ययन का केंद्र बिंदु बिहार के विकास में वर्ष 2005 से 2020 तक विधानसभा की सदस्यों के कार्यों का व्यवस्थित विवेचन एवं विश्लेषण है।

अनुसंधान के लिए योग्य अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध विषय में द्वितीय स्रोतों का उपयोग किया गया है। आवश्यकता अनुसार, प्राथमिक तथ्यों का भी सहारा लिया गया है। प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए संबंधित विशेषज्ञों से परामर्श, बिहार विधान सभा के सदस्यों का साक्षात्कार भी लिया गया है।

द्वितीयक तथ्यों के संकलन के लिए विधायिका संबंधित पुस्तकें, विधानसभा संबंधित आलेख, संबंधित शोध–ग्रंथ एवं शोध–पत्रिकाओं, प्रकाशित पुस्तकों तथा विभिन्न विद्वानों की प्रकाशित रचनाओं का उपयोग किया गया है। साथ ही, तथ्यों अथवा आंकड़ों को प्राप्त करने के लिए समकालीन समाचार पत्रों, संबंधित पत्र–पत्रिकाओं और अभिलेखागार में उपलब्ध दस्तावेजों का भी सहारा लिया गया है।

इसके अलावा सरकारी प्रतिवेदन, प्रखंड व जिला कार्यालय के अभिलेखों से योजनाओं का अध्ययन, सरकारी अधिनियम, सरकारी निर्देश, समकालीन संबंधित सरकारी दस्तावेज, विधानसभा की कार्यवाही की प्रतियां, विभिन्न संबंधित अध्यादेश का सहारा लिया गया है।

बिहार में विकास नीति

बिहार में विकास का क्या मॉडल है? इसके जवाब में एक आम राय है– सरकार के काम ने, बिहार के विकास ने उसे ज़रूर मजबूत किया है जो सबसे कमज़ोर है। अलग अलग आंकड़े इस चित्र को केवल किश्तों में ही बता पाते हैं। चाहे गरीबी उन्मूलन के आंकड़े हों (भारत सरकार के अनुसार) जिसमें बिहार की रफ़्तार देश में सबसे तेज़ रही है। चाहे महिलाओं की साक्षरता दर में सुधार के आंकड़े हों, जिसमें बिहार देश ही नहीं बल्कि दुनिया में सबसे आगे रहा है। चाहे किसानो को मिल रहा लाभ हो– लगातार बढ़ती उत्पादकता से, नई तकनीकों से, seed replacement rates से, सिंचाई की बेहतर व्यवस्था से, कृषि के व्यापक रोडमैप और कृषि कैबिनेट जैसे विज़न से। चाहे गाँव को धुरी बनाकर किया जा रहा विकास हो– रोड, पुल, पुलिया, कानून व्यवस्था, बिजली का बढ़ता तंत्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, दवाईयों की उपलब्धता, ग्राम में जन अभियान और अनुदान से शैचालय का निर्माण और इस सबके साथ प्रत्येक पंचायत में स्कूल, स्कूल में निरंतर improve होता gender ratio हो।

बिहार देश में एक ऐसा अनोखा उदाहरण है जहाँ public sector में innovation की रफ़्तार private sector या civil society से किसी भी मायने में कम नहीं है। हर योजना के पीछे एक innovative सोच के साथ एकसूत्रीय विबने है– कारगर ढंग से योजना का लाभ अंतिम द्वार तक पहुंचे।

बिहार का रास्ता नया है। आज तक चाहे केंद्र सरकार हो या कोई राज्य सरकार– वो कमज़ोर और गरीब वर्ग को वोटबैंक में बदलने के हिसाब से नीतियाँ बनाती थी चाहे क़र्ज़ माफ़ी की नीति हो, मुफ्त बिजली पानी देने की नीति हो, या मुफ्त में कुछ भी बांटने की नीति– ये सब चवचनसपेज उमेंनतमे का मुख्य ध्येय राजनीतिक सफलता था सामाजिक सुधार नहीं। नतीजा भी कुछ वैसा ही रहा।

बिहार ने दिखाया है कि कमज़ोर वर्ग से भी काम के आधार पर वोट माँगा जा सकता है। जब हम काम के आधार पर वोट की मजदूरी मांगते हैं तो कमज़ोर, मजबूर और मज़दूर तबके को भी संबोधित करते हैं। ये कोई राजनीतिक नारा नहीं है बल्कि हर कमज़ोर तबके को सशक्त करने का भाव है।

सभी कमज़ोर तबकों का विकास तभी हो सकता है जब कारगर योजनायें हों और उन्हें लागू करने वाली शासन व्यवस्था विनम्र हो, संवेदनशील हो और सेवाभाव से काम कर सके। जब शासन प्रणाली का मुखिया अपने काम की मजदूरी मांगते हुए सबसे कमज़ोर वर्ग के आगे सर झुकाता है तो व्यवस्था में संवेदनशीलता और सेवाभाव बढ़ता है। इसलिए वोट की मजदूरी कोई नारा नहीं है, बल्कि एक व्यापक सन्देश है लोकतन्त्र की मालिक माने जाने वाली जनता के लिए और उनकी सेवा के लिए बनी शासन व्यवस्था को।

बिहार में विकास नीति का प्रभाव

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने 2005 में जब बिहार की सत्ता संभाली थी, उन्हें विरासत में एक बीमार राज्य मिला था। 2005 से पहले के एक दशक में राज्य के सकल घरेलू उत्पाद की औसत

विकास दर 5–8 प्रतिशत थी, जो राष्ट्रीय औसत (करीब 7 प्रतिशत से काफी कम थी। इसलिए बिहार को ''देश के विकास में बाधक'' और ''देश पर बोझ'' कहा जा रहा था। लेकिन, वित्तीय संसाधनों की सीमित उपलब्धता और अन्य चुनौतियों के बावजूद बिहार ने बीते डेढ़ दशक में लगातार राष्ट्रीय औसत से तेज गति से सामाजिक–आर्थिक व राजनीति विकास किया है।

बिहार की आर्थिक विकास दर बीते सालों में लगातार बढ़ी है। इसका अच्छा असर राज्य में प्रति व्यक्ति आय पर भी पड़ा है। प्रति व्यक्ति आय (GSDP) 2005 में जहां 8773 था वही यह बढ़कर 2019 में 47541 हो गया इस तरह से बिहार में लोगों का प्रति व्यक्ति आय 38768 बढ़ा। यह बढ़ोतरी राष्ट्रीय आर्थिक विकास दर की तुलना में अधिक है। 2011–12 से 2018–19 के बीच बिहार की विकास दर 13–3 प्रतिशत रही, जबकि राष्ट्रीय औसत मात्र 7–5 प्रतिशत रहा। इससे पहले 2004–05 से 2011–12 के बीच बिहार की औसत विकास दर 11–7 प्रतिशत रही, जबकि इसका राष्ट्रीय औसत 8–3 प्रतिशत था। 15वें आर्थिक सर्वेक्षण (2020–21) की रिपोर्ट के अनुसार स्थिर मूल्य पर राज्य की आर्थिक विकास दर 10.5 प्रतिशत और वर्तमान्य मूल्य पर 15.4 फीसदी है। यह वृद्धि की तुलना में अधिक है। लगातार ''डबल डिजिट ग्रोथ रेट'' के कारण बिहार को ''देश का ग्रोथ इंजन'' कहा जाने लगा है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि हाल के वर्षों में पंजाब की विकास दर ज्यादातर राष्ट्रीय औसत से काफी कम रही है। राष्ट्रीय वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की दर में बीते कई सालों में गिरावट दर्ज हुई है, वहीं बिहार की आर्थिक विकास दर का दो अंकों में रहने का सिलसिला बरकरार है।

2006 से नीतीश कुमार ने बड़े आर्थिक सुधारों के जरिये बिहार के विकास को गति देने की पहल की। कई आयोगों का गठन किया गया। आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए कई नई नीतियों की घोषणा की गई और कई कानूनों में बड़े बदलाव की पहल की गई। कृषि क्षेत्र में व्यापक सुधार करते हुए कृषि उत्पादन विपणन बोर्ड (एपीएमबी) को भंग करना उन बड़े फैसलों में से शामिल था। नतीजा यह हुआ कि जिस बिहार में कृषि क्षेत्र की औसत विकास दर 2001 से 2005 के बीच ,क फीसदी से भी कम रही थी, वहां यह दर वर्ष 2005–06 से 2014–15 के बीच बढ़ कर 4–7 प्रतिशत हो गई, जबकि इसका राष्ट्रीय औसत सिर्फ 3–6 प्रतिशत था। पिछले पाँच वर्षों 2016–17 से 2020–21 के दौरान कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में 2–1 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई है। पशुधन और मत्स्य पालन की वृद्धि दर क्रमशः 10 प्रतिशत एवं 7 प्रतिशत रही।

बिहार ने कृषि और आर्थिक सुधारों के जरिये पिछले डेढ़ दशक में विकास की लंबी छलांग लगाकर देश–दुनिया को नई राह दिखाई है। बिहार ने बताया है कि नेतृत्व और नीयत सही हो, तो क्रांतिकारी परिवर्तन का कोई भी सपना धरातल पर साकार हो सकता है। कृषि–आर्थिक सुधारों के जरिए बिहार ने देश–दुनिया को दिखाई नई राह, विकास दर में पंजाब को भी पीछे छोड़ा है।

बिहार में विकास–नीति को प्रभावित करने वाले कारक

भारत के लिए बिहार महत्वपूर्ण राज्य हैं। क्योंकि अब बिहार अन्य राज्यों से विकास दर में काफी आगे हैं।

बिहार एक महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक दौर से गुजर रहा है जहां राष्ट्र के विकास मे बिहार राज्य की सहभागिता कई गुना बढ़ी है। विगत कुछ वर्षों में बिहार ने अपने प्रबल मानव संसाधन

के बल पर एक अभूतपूर्व मुकाम हासिल किया है, जिसमें राज्य सरकार के कुशल आर्थिक प्रबंधन और सामाजिक योजनाओं की भूमिका अद्वितीय है।

आजादी के 7 दशकों के बाद भी बिहार को गरीबी की ओर ले जाने वाले मुख्य कारण

- शैक्षिक बुनियादी ढांचा– बिहार की शिक्षा प्रणाली सूची में सबसे नीचे है। बिहार की साक्षरता दर सबसे आखिर में है। बिहार में सिर्फ 31 यूनिवर्सिटी, सिर्फ लगभग 2000 कॉलेज यानी एक लाख छात्रों के लिए सिर्फ 7 कॉलेज। कल्पना कीजिए कि आपके राज्य में युवाओं की क्षमता है लेकिन उनके पास अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा की कमी है। बिहार में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का स्वाद कुछ ही लोगों को मिला। प्रारंभिक शिक्षा सभी लोगों के लिए अनिवार्य कर दी जानी चाहिए क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि गरीब लोगों को अपने बच्चों को शिक्षित करने से कोई लाभ नहीं है। एक शिक्षित शिक्षण प्रणाली का अभाव और खराब रखरखाव वाला शिक्षण संस्थान भी इसके लिए जिम्मेदार है। शिक्षा की कमी घरेलू हिंसा, गरीबी, जीवन स्तर का निम्न स्तर, भूमि और कृषि का बुनियादी ज्ञान नहीं होना, सामाजिक भेदभाव, एक अलग स्तर पर निरंतर शोशण जैसी कई सामाजिक समस्याओं को जन्म देती है।
- अस्थिर राजनीति– सुशासन और मजबूत राजनीतिक नेतृत्व किसी भी राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बिहार का खराब प्रदर्शन भी जाति आधारित राजनीति की वजह से है। जाति, वर्ग और जातीय विभाजन आधारित राजनीति अभी भी बिहार में एक प्रमुख प्रथा है। अधिकांश राष्ट्रीय राजनीतिक दल ध्रुवीकृत मतदान प्रणाली पर काम कर रहे हैं, प्रमुख में उनकी जाति का उम्मीदवार शामिल है जो जीतने के बाद अपने लोगों की समस्याओं को भूलकर अपने कार्यकाल का आनंद लेता है। बिहार में जाति आधारित राजनीति के आगे–पीछे का दौर चलता रहता है, जहां लोग अपनी जाति के आधार पर चुने जाते हैं।

  1991 से 2002 के बीच 3 राष्ट्रपति शासन और 8 से अधिक सरकार परिवर्तन बिहार की राजनीतिक अस्थिरता को दर्शाता है। जब आपकी चुनी हुई सरकार अपनी कुर्सी बचाने में लगी है तो उनसे कोई उम्मीद कैसे कर सकता है कि वे अपने राज्यों में किसी तरह का विकास करेंगे। यह राजनीतिक अस्थिरता आर्थिक विकास को नुकसान पहुँचाती है।
- असमान भूमि वितरण– भूमि का असमान वितरण अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं जैसे गरीबी, शिक्षा की कमी, उच्च वर्ग और उच्च वर्ग के भेदभाव आदि को जन्म देता है। स्वतंत्रता के बाद बिहार में भूमि संबंधी अपराध अधिक आम हो गए। वित्त और शिक्षा की कमी असमान भूमि के कारण हो सकती है, जमींदारों के बच्चों के पास गरीबों की तुलना में शिक्षा और जीवन स्तर के लिए अधिक शक्ति और पैसा है।

  बिहार के ऊपरी तबकों को हमेशा नौकरशाही का समर्थन प्राप्त रहा है, सत्तारूढ़ दल हमेशा समाज के ऊपरी तबके द्वारा नियंत्रित किया जाता रहा है। वे इसमें कोई बदलाव नहीं चाहते क्योंकि इससे उनमें गुणवत्ता पैदा होगी। भूमि असमान रूप से वितरित नहीं की गई थी,

लेकिन औपनिवेशिक काल के दौरान, चार्ल्स, अर्ल कॉर्नवॉलिस का स्थायी बंदोबस्त अधिनियम बिहार में एक ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा पेश किया गया था, जहां जमींदारों को भूमि से निर्धारित कर का भुगतान करना पड़ता था।

सरकार को दिया जाने वाला कर राजस्व तय होता है, चाहे बाढ़ हो, प्राकृतिक आपदा हो या भूस्वामी द्वारा उत्पन्न राजस्व भी नहीं होता है, जमींदारों को उनकी जमीन में नुकसान होता है। किसान और किसान जो जमीन के मालिक हैं इसे खो दिया और अपनी जमीन पर किरायेदार बन गए।

- केंद्र द्वारा प्रदान किए गए धन की कमी– ऐसी अस्थिर सरकार, उच्च भ्रष्टाचार दर के साथ केंद्र द्वारा प्रदान किए गए धन की हमेशा कमी रहती है। चूंकि शासन लोक कल्याण के लिए इसका उपयोग करने में सक्षम नहीं है। यह आसानी से समझा जा सकता है कि कुछ मामलों में उनका खराब शासन उन्हें प्रदान किए गए बजट का 50 प्रतिशत ही उपयोग कर पाता है। एक नई योजना शुरू होने के साथ, बिचौलिए और भ्रष्टाचार एक बड़ी बाधा के रूप में सामने आते हैं। बिहार की सरकार बुनियादी ढांचे, शिक्षा प्रणाली और यहां तक कि स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास में हमेशा विफल रही है।
- सिविल सेवा मानसिकता– हमने देखा है कि बिहार में अधिक सिविल सेवा एवं अन्य सरकारी सेवा उन्मुख युवा दिमाग हैं। कारोबार को लेकर उनका नजरिया बेहद खतरनाक है। जैसा कि राज्य और लोग इतनी गरीबी देखते हैं, युवाओं की सरकारी नौकरी पाने के बाद मेज पर और मेज के नीचे कमाई करने की स्पष्ट मानसिकता है। यह दहेज को बहुत जोर से और मजबूत स्तर पर प्रोत्साहित करता है, हमने देखा है कि सरकारी कर्मचारियों की दहेज दर सूची तय की गई है। उच्च सरकारी पद पर होने पर व्यक्ति को अधिक दहेज मिलेगा।
- उच्च जनसंख्या– जनसंख्या कम करने में बिहार ज्यादा योगदान नहीं है। राष्ट्रीय औसत की तुलना में बिहार की प्रजनन दर में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की कमी बिहार के लिए जनसंख्या का एक प्रमुख स्रोत है। प्राकृतिक संसाधनों पर जनसंख्या का भारी बोझ भी बढ़ रहा है। जनसंख्या की उच्च संख्या भी युवा बेरोजगारी को जन्म देती है। पिछले दशक में 25 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि देखी गई है।

उपरोक्त वर्णित कारणों में विगत डेढ़ दशक में बिहार ने अपने प्रबल मानव संसाधन के बल पर एक अभूतपूर्व मुकाम हासिल किया है, जिसमें राज्य सरकार के कुशल आर्थिक प्रबंधन और सामाजिक योजनाओं की भूमिका अद्वितीय है। बिहार के बेहतर आर्थिक विकास दर का राज्य के सामाजिक क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा है।

पिछले डेढ़ दशक में पूरे विश्व में आर्थिक वित्तीय ढांचे में एक व्यापक बदलाव महसूस किया है, जिसका प्रभाव बिहार समेत पूरे देश पर पड़ा है। जहां एक ओर वैश्विक आर्थिक विकास बेहतर हुआ और पूरी दुनिया का संयुक्त विकास दर तीन प्रतिशत के आस–पास रहने की संभावना है, वही जलवायु परिवर्तन और बढ़ते प्रदूषण के स्तर ने आर्थिक सामाजिक विकास पर प्रतिकूल असर किया

है। वर्तमान परिदृश्य में राजकीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में सूचना प्रौधोगिकी के अनुकलन, वैज्ञानिक एवं आर्थिक अनुसंधान, सटीक एवं सामयिक नीति निर्माण और कुशल प्रबंधन की अहम भूमिका होगी जिसका सीधा प्रभाव राज्य के आर्थिक आय और व्यय पर पड़ेगा।

बिहार विकास–नीति को मजबूती प्रदान वाले कारक

- जीएसटी– इस दिशा में केंद्र सरकार के द्वारा लागू किया गया जी.एस.टी. कर प्रणाली राष्ट्र एवं राज्य की अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने का एक शानदार उदाहरण है। बिहार ने न सिर्फ सबसे पहले जी.एस.टी. कर प्रणाली का समर्थन किया बल्कि उसे क्रियान्वित करने के लिए ठोस आर्थिक एवं वित्तीय कदम उठाये जो दर्शाता है कि बिहार नयी व्यवस्था निर्माण के लिए कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए कटिबद्ध है।
- बिहार की जीडीपी– सेवा क्षेत्र में बेहतर विकास की वजह से अर्थव्यवस्था में कुछ बुनियादी संरचनात्मक बदलाव हुए हैं। 21वीं सदी को भारत की अर्थव्यवस्था के लिहाज से काफी अहम बताया जाता रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही नहीं बल्कि कई नामचीन अर्थशास्त्री भी कई मौकों पर 21वीं सदी को ''भारत की सदी'' बता चुके हैं। इस दो दशक के दौरान आर्थिक मोर्चे पर देश ने बढ़िया परफॉर्म भी किया है। इस दौरान कभी अपराध और भ्रश्टाचार के लिए कुख्यात रह ने वाले बिहार ने हैरान करने वाले नतीजे दिए हैं। पिछले 15–17 सालों के दौरान बिहार की जीडीपी और बिहार के बजट का साइज करीब 10 गुना हो गया है।
- राष्ट्रीय प्रतिष्ठित पुरस्कार– बिहार को विकास और श्रेष्ठता से सम्बंधित पिछले डेढ़ दशक में कई राष्ट्रीय प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए। राज्य सरकार की भ्रष्टाचार के प्रति शून्य टोलेरेंस नीति का ही परिणाम है कि राज्य के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार को प्रथम मुफ़्ती मोहम्मद सईद पुरस्कार ''सार्वजनिक जीवन में शुचिता'' के लिए जम्मू–कश्मीर सरकार द्वारा नवाजा गया। तथा अन्य क्षेत्रों में प्राप्त पुरस्कार–

- सीएनएन–आइबीएन 'ग्रेट इंडियन ऑफ दि इयर' अवार्ड– राजनीति, 2008
- एनडीटीवी इंडियन ऑफ दि इयर– राजनीति, 2009
- इकोनॉमिक टाइम्स 'बिजनेस रिफार्मर ऑफ दि इयर', 2009
- रोटरी इंटरनेशनल द्वारा ''पोलियो उन्मूलन चौम्पियनशिप अवार्ड'', 2009
- ''एमएसएन इंडियन ऑफ दि इयर'', 2010
- एनडीटीवी इंडियन ऑफ दि इयर– राजनीति, 2010
- फ़ोर्ब्स 'इंडियन पर्सन ऑफ दि इयर', 2010
- सीएनएन–आईबीएन 'इंडियन ऑफ दि इयर अवार्ड' राजनीति, 2010
- ग्स्त्, जमशेदपुर द्वारा, ''सर जहाँगीर गांधी मेड'', 2011
- फॉरेन पॉलिसी मैगजीन के टॉप 100 बैश्विक चिंतक लोगों में 77वें स्थान पर, 2012
- जेपी स्मारक पुरस्कार, नागपुर मानव मंदिर, 2013

- अणुव्रत सम्मान, श्वेतांबर तेरापंथ महासभा (जैन संस्था) द्वारा, बिहार में शराब बंदी लागू करने के लिए, 2017 एवम् भारत सरकार द्वारा वर्ष 2017 में मक्का उत्पादन में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए राज्य को ''कृषि कर्मण पुरस्कार'' दिया गया है।

निष्कर्ष

जैसा कि भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था के योगदान में एक प्रमुख खिलाड़ी है, बिहार राज्य लगातार अच्छे प्रदर्शन के साथ देश के आर्थिक विकास को ऊपर खींच रहे हैं।

बेहतर बुनियादी ढांचे, शिक्षा प्रणाली, स्वास्थ्य देखभाल आदि जैसे कई क्षेत्रों पर काम करने की जरूरत है। बहुसंख्यक आबादी को अधिक जिम्मेदार होने की जरूरत है और राष्ट्र के विकास के प्रति अपने कर्तव्य को जानने की जरूरत है।

केन्द्र, बिहार की समस्याओं और खासियत को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाये। एक ही तरह की योजना से पूरे देश का विकास संभव नहीं है। क्षेत्रीय असमानता रहेगी तो सिर्फ बिहार ही नहीं कई अन्य राज्यों का भी विकास नहीं हो पाएगा। बिहार की 6 खासियतें हैं– ऐतिहासिक स्थल, कृषि योग्य भूमि, उपजाऊ जमीन, मेहनती लोग, टेलेंटेड युवा और बिहारियों की इच्छा शक्ति। वहीं तीन मूल समस्याएं हैं–अधिकतम जनसंख्या घनत्व, बाढ़ और लैंड लॉक्ड स्टेट। योजनाएं बनाते समय इन बातों का ध्यान रखते हुए लक्ष्य प्राप्त करने का तरीका निकालना होगा। बिहार को विशेष दर्जा मिल जाये तो हम चीन को पीछे छोड़ सकते हैं। फिलहाल सीमित इलाके के विकास पर देश का विकास दर निर्भर है।

बिहार में विकास के महत्वपूर्ण पहलू

संदर्भ

1. राय, प्रमोद कुमार. (2021). बिहार की राजनीति. ऑरेंज बुक पब्लिकेशनः छत्तीसगढ़।
2. पुष्यमित. (2020). रूकतापुर. राजकमल प्रकाशनः दिल्ली।
3. त्यागी., रस्तौगी. (2019). भारत में स्थानीय स्वशासन. संजीव प्रकाशनः मेरठ।
4. सहस्त्रबुद्धे, विनय प्रभाकर. (2019). विकास की राजनीति. प्रभात प्रकाशनः पटना।
5. ठाकुर, संकर्षण. (2017). बंधु बिहार. प्रभात प्रकाशनः दिल्ली।
6. कुमार, नितीश. (2016). विकसित बिहार की खोज. प्रभात प्रकाशनः दिल्ली।
7. सिंह, संतोष. (2015). रूल्ड या मिसरूल्ड. ब्लूमस्बेरी इंडियाः महाराष्ट्र।
8. ठाकुर, संकर्षण. (2015). अकेला आदमीः कहानी नीतिश कुमार की. प्रभात प्रकाशनः दिल्ली।
9. गावा, ओम प्रकाश. (2013). राजनीति सिद्धांत की रूपरेखा. नेशनल पब्लिकेशन हाउसः नई दिल्ली।
10. सिन्हा, अरुण. (2013). नीतिश कुमार और उभरता बिहार. प्रभात प्रकाशनः दिल्ली।
11. सिंह, प्रभूनाथ. (2013). भारत में लोकतंत्र. आलोक प्रकाशनः पटना।
12. श्रीकांत. (2011). बिहारः राज्य और समाज. वाणी प्रकाशनः पटना।
13. शर्मा, राशि. (2010). राजनीतिक समाजशास्त्र की रूपरेखा. पी.एच.आई. प्राइवेट लि.ः नई दिल्ली।
14. चौधरी, प्रसन्न कुमार. (2010). बिहार में सामाजिक परिवर्तन के कुछ आयाम. वाणी प्रकाशनः पटना।
15. सिंहल, एस०सी०. (2007). भारतीय शासन एवं राजनीति. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशनः आगरा।
16. हमेश्वीर, एस०आर०. (1999). भारत में स्थानीय शासन. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशनः आगरा।
17. सिंह, वामेश्वर. (1996). भारत में स्थानीय स्वशासन. रेखा प्रकाशनः पटना।
18. भारद्वाज, आर०के०. (1993). पार्लियामेंट डेमोक्रेसी एंड लेजिस्लेचर्स. नेशनल पब्लिशिंग हाउसः नई दिल्ली।
19. कौशिक, सुशीला. (1990). भारतीय शासन और राजनीति. हिंदी माध्य कार्यान्वयन निदेशालयः दिल्ली वि०वि०।

रपोर्ट

20. वित्त विभाग. (2005 से 2020). *आर्थिक सर्वेक्षण.* बिहार सरकारः पटना।

गुगल सर्च

21. https://www.vokal.in/question/5TCV-bihar-mein-kul-kitne-college-hai दिनांक 25.02. 2023 को 8:17 बजे सुबह देखा।

22. https://kulhaiya.com/bihar-list-of-university-in-bihar/#:~:text=%E0%A4%AC%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B0%20%E0 %A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82%20%E0%A4%95%E0%A5%81%E 0%A4%B2%20%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%AF%E0%A5%8B%E0%A4%82%20%E0%A4%95%E0%A5%80,20%20%E0%A4%B8%E0%A5%87%2022%20%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4% B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%AF%20%E0%A4%B9%E0%A5%88%E0%A4%82%E0%A5%A4 दिनांक 25.02.2023 को 11:38 बजे सुबह देखा

23. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%B6_%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B0 दिनांक 25.02.2023 को 2:09 बजे दोपहर में देखा